# 07. महाजनपद (Mahajanapada)

- 6वीं शताब्दी ई.पू. अखंड भारत में द्वितीय नगरीकरण प्रारम्भ हो गई। जिसे महाजनपद कहते हैं।
- प्राचीन भारत में राज्य के प्रशासनिक इकाईयों को महाजनपद कहा जाता है।
- कुछ जनपदों का वर्णन उत्तरवैदिक काल से मिलता है।
- इसका समय अवधि 600 ई.पू. से 340 ई.पू. तक माना जाता है।
- इसका प्रमुख भाषा संस्कृत एवं प्राकृत है।
- इसका शासन व्यवस्था गणराज्य राज्यतंत्र था।
- इस समय पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार में लोहे का व्यापक प्रयोग होने से बड़े-बड़े प्रदेशिक या जनपद राज्यों के निर्माण के लिए उपयुक्त परिस्थिति बन गई।
- लोहे के हथियारों के कारण योद्धा वर्ग महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने लगे।
- खेती के नये औजार और उपकरणों से किसान अपनी आवश्यकता से अधिक अनाज पैदा करने लगे। अब राजा अपने सैनिक और प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए इस अतिरिक्त अनाज को एकत्रित करवा सकते थे।
- लोगों की जो प्रवल निष्ठा अपने जन या कबीले के प्रति थी वह अब अपने जनपद या महाजनपद के प्रति हो गए।

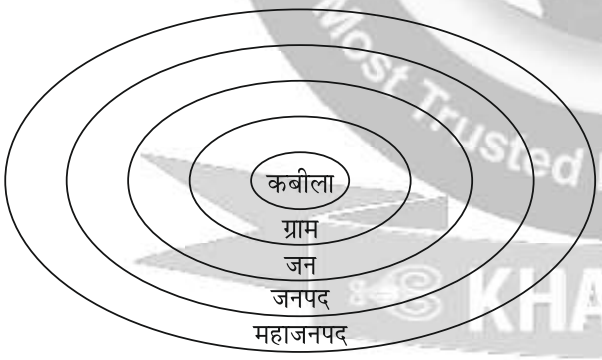


➢ **वर्तमान में 16 महाजनपद स्थिति–**

| | |
|---|---|
| उत्तरप्रदेश | 8 महाजनपद |
| बिहार | 3 महाजनपद |
| राजस्थान | 1 महाजनपद |
| मध्यप्रदेश | 1 महाजनपद |
| दक्षिण भारत | 1 महाजनपद |
| भारत के बाहर | 2 महाजनपद |

➢ **बौद्ध ग्रंथ अंगुतर निकाय तथा जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में 16 महाजनपद की चर्चा है, जो निम्नलिखित हैं–**

| क्र. सं. | महाजनपद | राजधानी | महत्वपूर्ण नगर (आधुनिक नामों के अनुसार) |
|---|---|---|---|
| 1. | गान्धार | तक्षशिला | रावलपिंडी व पेशावर (पाकिस्तान) |
| 2. | कम्बोज | हाटक/राजपुर | राजौरी व हजारा क्षेत्र (कश्मीर) |
| 3. | मत्स्य/मच्छ | विराटनगर | जयपुर का समीपवर्ती क्षेत्र (राजस्थान) |
| 4. | कुरु | इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) | दिल्ली, मेरठ और हरियाणा के आस-पास का क्षेत्र |
| 5. | शूरसेन | मथुरा | मथुरा (उत्तर प्रदेश) |
| 6. | कोशल | श्रावस्ती | फैजाबाद, गोंडा, बहराइच (उत्तर प्रदेश) |
| 7. | पांचाल | अहिच्छत्र, काम्पिल्य | बरेली, बदायूँ, फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश) |
| 8. | चेदि | शक्तिमती | बुंदेलखंड (उत्तर प्रदेश) |
| 9. | वत्स या वंश | कौशाम्बी | इलाहाबाद एवं मिर्जापुर जिला (उत्तर प्रदेश) |
| 10. | काशी | वाराणसी | वाराणसी के आसपास के क्षेत्र (उत्तर प्रदेश) |
| 11. | मल्ल | कुशावती/कुशीनारा | देवरिया (उत्तर प्रदेश) |
| 12. | अश्मक या अस्मक | पाटन/पोतन | गोदावरी नदी का दक्षिणी क्षेत्र (दक्षिण भारत का एकमात्र जनपद) |
| 13. | अवन्ति | उज्जैन/महिष्मति | मालवा (मध्य प्रदेश) |
| 14. | वज्जि/वृजि | वैशाली/विदेह/मिथिला | वैशाली, मुजफ्फरपुर, दरभंगा (बिहार) |
| 15. | अंग | चम्पा | भागलपुर, मुंगेर (बिहार) |
| 16. | मगध | गिरिव्रज (राजगृह) | पटना, गया, नालंदा (बिहार) |

- गंधार महाजनपद पाकिस्तान में था। इसकी राजधानी तक्षशिला विश्व की प्राचीनतम विश्वविद्यालय का केन्द्र था।
- अस्मक दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद था, जो गोदावरी नदी के तट पर था।
- उत्तरप्रदेश का मल्ल महाजनपद गणराज्य था।
- बिहार का वज्जि महाजनपद एक गणराज्य था।
- वज्जि की राजधानी वैशाली में लिच्छिवी गणराज्य का शासन था। जो पूरे विश्व का सबसे पुराना गणराज्य था। यह 8 कुलों का एक संघ था।
- सबसे शक्तिशाली महाजनपद मगध महाजनपद था। इसके दक्षिण में विंध्याचल पर्वत/पश्चिमी में सोन नदी, उत्तर में गंगा तथा पूरब में फल्गू जैसी नदियाँ इस महाजनपद के प्राकृतिक दुर्ग का कार्य करती है।
- राजस्थान के मरूस्थलीय क्षेत्र में स्थित एक मात्र महाजनपद मत्स्य था।
- महाभारत तथा पुराणों में चंपा का प्राचीनतम नाम मालिनी था।
- महात्मा बुद्ध ने अपना सर्वाधिक उपदेश कौशल की राजधानी श्रावस्ती में दिये।
- मल्ल की राजधानी कुशीनगर में महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ।
- कान्यकुब्ज (कन्नौज) पांचाल राज्य के अंतर्गत ही आता था।
- अंग की पहली चर्चा अर्थववेद में किया गया है।

## मगध

- 16 महाजनपदों में मगध जनपद प्रारंभ में तो छोटा था। जो पाटलीपुत्रा से राजगीर तक फैला हुआ था। किन्तु मगध के शासकों ने मगध के सीमा को बंगाल से लेकर अफगानिस्तान तक तथा हिमालय से लेकर सतपुड़ा तक फैला दिया।
- इसका विस्तार उत्तर में गंगा नदी से दक्षिण में विन्धय पर्वत तक तथा पूर्व में चंपा से पश्चिम में सोन नदी तक विस्तृत था।
- मगध महाजनपद पर कुल 7 राजवंशों ने शासन किया।

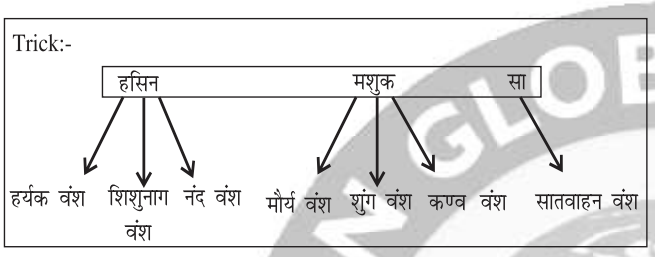


## हर्यक वंश ( 544-412 ई.पू. )

### बिम्बिसार ( 544-492 ई.पू. )

- इस वंश के संस्थापक बिम्बिसार थे। यह पहला ऐतिहासिक राजवंश था।
- इसकी राजधानी **राजगृह** या **गिरिव्रज** थी।
- बिम्बिसार 52 वर्षों तक मगध पर राज्य किया। यह प्रथम राजा था जिसने प्रशासनिक राज्य पर बल दिया। यह स्थायी सेना रखता था।
- बिम्बिसार बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- बिम्बिसार ने **अंग राज्य** के शासक **ब्रह्मदत्त** को हराकर अपने पुत्र अजातशत्रु को वहाँ का शासक बना दिया।
- बिम्बिसार ने विवाह के माध्यम से दहेज के रूप में लिए गए क्षेत्र से अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- बिम्बिसार की पहली पत्नी महाकोशला थी। जो कोशल राज की पुत्री और प्रसेनजीत की बहन थी। इनके साथ दहेज में काशी प्रांत मिला था। जिससे एक लाख की वार्षिक आय आती थी।
- बिम्बिसार की दूसरी पत्नी वैशाली (लिच्छवी) नरेश चेतक की पुत्री राजकुमारी चेल्लना थी। जिससे अजातशत्रु का जन्म हुआ था।
- बिम्बिसार की तीसरी पत्नी पंजाब के मद्र कुल की राजकुमारी छेमा थी।
- बिम्बिसार की चौथी पत्नी आम्रपाली थी। जो वैशाली की गणीका थी।
- बिम्बिसार अपनी पत्नी रानी **चेल्लेना** से प्रवाहित होकर **जैन धर्म** अपना लिया था।
- यह जैन तथा बौद्ध दोनों धर्मों के समकालीन थे।
- बिम्बिसार के पिता का नाम **भाट्टीया** था।
- पुराण में बिम्बिसार को **श्रेणीक** कहा जाता है।
- इसके समय अवन्ति के राजा **चन्द्र प्रद्धोत** को एक असाध्य रोग (लाइलाज बीमारी) हो गई। अत: इन्हें ठीक करने के लिए बिम्बिसार ने अपने राज **वैद्य जीवक** को भेजा। जीवक के इलाज से **चन्द्र प्रद्धोत** स्वस्थ हो गए। उन्होंने अवन्ति को मगध के अधीन कर दिया और अंग राज्य को जीतकर **मगध सम्राज्य** का विस्तार किया।
- बिम्बिसार छोटे राज्यों को युद्ध करके जीत लेता था। इसने वैशाली पर भी आक्रमण किया था, किन्तु सफल नहीं हो पाया।
- इसकी हत्या इसी के पुत्र **अजातशत्रु** ने 492 ई. पू. में कर दी।

### अजातशत्रु ( 492-460 ई.पू. )

- इसका अर्थ होता है, शत्रुओं का नाश करने वाला। इसे कुणिक भी कहते हैं। इसने अपनी पिता की हत्या कर दी थी। अत: इसे **पितृहन्ता** कहते हैं।
- यह अपने मामा प्रसेनजीत की पुत्री **वजीरा** से प्रेम करता था।
- इसने सुरक्षा की दृष्टि से राजगीर को किलाबंदी करा दी थी।
- राजगीर पांच पहाड़ियों से घिरा हुआ है।
- इसके समय सबसे बड़ी घटना **महात्मा बुद्ध** की मृत्यु थी।
- अजातशत्रु के काल में ही **सत्पर्णी गुफा** में राजगीर से **पहली बौद्ध संगीति** हुई।
- इसने अपने सहयोगी **वर्षकार** के सहयोग से वैशाली पर आक्रमण किया और उसे जीत लिया।
- इस युद्ध में उसने दो नए हथियार **रथमूसल** तथा **महाशिला कंटक** का प्रयोग किया।
- जैन धर्म के पहले उपांग में **महावीर** और **अजातशत्रु** के रिश्ते के बारे में बताया है।
- यह प्रारंभ में जैन तथा बाद में बौद्ध धर्म को अपना लिया।
- इसने **16** वर्ष तक मगध पर शासन किया था।
- इसके दो पुत्र **उदयभद्र** तथा **उदायिन** था।
- इसके पुत्र **उदायिन** ने इसकी हत्या कर दी।

### उदायिन ( 460-444 ई.पू. )

- इसने अपनी राजधानी **कुसुमपुर ( पुरुषपुर )** बनाया था। यही कुसुमपुर (पुरुषपुर) आगे चलकर **पाटलीपुत्र** कहलाया था।
- इनकी माता का नाम **पद्मावती** था।
- इसने अपने पिता की हत्या की थी। इसलिए बौद्ध धर्म में इसे **पितृहन्ता** कहते हैं।
- इसका अन्य नाम **उदायी** या **उदयभद्र** था। यह चंपा का उप राजा था।

- पुराणों एवं जैन ग्रंथों में के अनुसार उदायिन ने गंगा एवं सोन के संगम के समीप एक शहर की स्थापना की, जिसका नाम **पाटलीपुत्र** रखा। इसके पुत्र ने पाटलीपुत्र को **पटना** रख दिया।
- इसने अपने राजधानी में **जैन चैत्य** का निर्माण करवाया था।
- इसकी हत्या किसी अनजान व्यक्ति द्वारा **चाकू से गोदकर** कर दी।
- उदायिन का पुत्र **नागदशक** एक **आयोग्य शासक** था। इसकी हत्या इसी के सेनापति **शिशुनाग** ने कर दी और एक **नया वंश शिशुनांग वंश** की स्थापना किया।
- महाभारत एवं पुराण में यह जानकारी मिलती है कि मगध पर सबसे पहले **वृहद्रथ वंश** का शासन था। जिसके संस्थापक **वृहद्रथ** थे।
- इसकी राजधानी गिरिब्रज (राजगृह) था।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक **जरासंध** था। इसकी राजधानी गृहव्रज थी। जरासंध ने अपनी साम्राज्य विस्तार का पूरे उत्तर भारत में करना चाहते थे। पर **पाण्डव** और **कृष्ण** के विरोध में उसे अपने उद्देश्य में सफल नहीं होने दिया।
- भीम के हाथों **मल्ल युद्ध** में **जरासंध** मारा गया। जरासंध का पुत्र उसके बाद मगध का शासक बना।
- रिपुंजय वृहद्रथ वंश का अंतिम शासक था। उसकी हत्या उसके मंत्री **कुलीक** ने कर दी और अपने पुत्र को शासक बना दिया।
- घाटिया नामक सामंत ने कुलीक के पुत्र की हत्या कर अपने पुत्र बिम्बिसार को **मगध की गद्दी** पर बैठा दिया।
- किन्तु इस वंश के बारे में ऐतिहासिक **साक्ष्य** बहुत ही कम है। अत: **हर्यक वंश** को ही पहला **ऐतिहासिक वंश** मानते हैं।

## शिशुनाग वंश ( 412-344 ई.पू. )

➢ **शिशुनाग ( 412- 394 ई.पू. )**

- इस वंश के संस्थापक **शिशुनाग** थे।
- इन्होंने **अवंती तथा वत्सराज** पर अधिकार कर उसे मगध साम्राज्य में मिलाया।
- इन्होंने अपनी राजधानी पाटलीग्राम से हटाकर **वैशाली** को बनाया।
- इसके शासन के समय मगध साम्राज्य के अंतर्गत **बंगाल** से लेकर **मालवा** तक का क्षेत्र था।
- इस वंश का अगला शासक **कालाशोक** था।

➢ **कालाशोक ( 394-366 ई.पू. )**

- शिशुनाग के मृत्यु के पश्चात् **कालाशोक** मगध की गद्दी पर बैठा।
- इसका नाम पुराण तथा दिव्यावदान में **काक वर्ण** मिलता है।
- इसने वैशाली के स्थान पर **पाटलीपुत्र** को पुन: अपना राजधानी बनाया।
- इसके समय द्वितीय **बौद्ध संगीति** वैशाली में हुई थी।
- यह **ब्राह्मण वंश** का प्रथम संस्थापक माना जाता था।
- पुराण के अनुसार यह **क्षत्रीय** था।
- इस वंश का अंतिम शासक **नंदीवर्धन** था, जिसकी हत्या **महापद्म नंद** ने कर दी और **शिशुनाग वंश** के स्थान पर **नंद वंश** की स्थापना किया।

## नंद वंश ( 344-323 ई.पू. )

- इस वंश का सर्वाधिक महाशक्तिशाली संस्थापक **महापद्म नंद** थे। जो जाति के शूद्र थे। इन्होंने राजपूतों का विनाश करके **सर्वक्षत्रांतक ( क्षत्रीयों का नाश करने वाला )** की उपाधि धारण कर ली।
- महापद्म नंद को **भार्गव ( दूसरा परशूराम का अवतार )** भी कहा जाता था।
- इस वंश की जाति नाई (नापिथ) थी।
- राजानंद के प्रधानमंत्री का नाम राक्षस था।
- राक्षस का असली नाम विष्णुगप्त था।
- केंद्रीय शासन पद्धति का जनक या पिता महापद्म नंद को माना जाता है।
- इस वंश के धन-दौलत के बारे में वर्णन चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा की गई थी।
- व्याकरण के आचार्य पाणिनी महापद्म नंद के परम् मित्र थे।
- इस वंश के शासनकाल में उपवर्ष, वर्ष, रूचि, वर, कात्यायन जैसे विद्वान जन्म लिया था।
- इसी वंश के शासक ने एकराष्ट्र की विचार-धारा दिया था।
- इस वंश की राजधानी पाटलिपुत्र थी।
- इस वंश के समय मगध राजनैतिक दृष्टि से अत्यंत शक्तिशाली साम्राज्य बन गया।
- सम्राट महापद्म नंद पहले शासक थे। जिन्होंने गंगा घाटी की सीमाओं का अतिक्रमण कर विंध्य पर्वत के दक्षिण तक विजय पताका लहराई थी।
- इसने कलिंग जीतकर **एकराट** तथा **एकक्षत्र** की उपाधि हासिल की।
- यह कलिंग जितकर पूरी तरह मगध में नहीं मिला पाया।
- इस वंश का द्वितीय शासक पण्डुक था।
- इस वंश का अगला शासक **घनानंद** था। यह बहुत ही क्रूर शासक था। इसने कलिंग में नहर निर्माण का कार्य किया था।
- इस वंश का सबसे लालची एवं धनसंग्रही शासक में घनानंद को गिना जाता था।
- जब सिकंदर भारत पर आक्रमण किया उस समय नंद वंश का अंतिम शासक घनानंद था।
- विश्व विजेता सिकंदर के भारत पर आक्रमण के समय सम्राट घनानंद की विशालतम सेना देखकर के हौसला पस्त हो गया। इतनी विशालतम शक्ति के सामने सिकंदर जैसे महान विश्व विजेता भी नत्मस्तक होकर वापस लौटने में ही अपनी भलाई समझी।
- सिकंदर के भारत से जाने के बाद मगध साम्राज्य में अव्यवस्था और अशांति फैल गई। प्रजा घनानंद के अत्याचार से ग्रस्त थे। पूरे राज्य में अराजकता फैली हुई थी।
- इसने अपने दरबार से चाणक्य को अपमान करके निकाल दिया, जिस कारण चाणक्य अपने प्रिय शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य के सहयोग से मगध में फैली अराजक और विस्फोटक स्थिति का लाभ उठाकर घनानंद की हत्या कर दी और मौर्य वंश की स्थापना कर दी।

## मौर्य वंश की स्थापना से पूर्व भारत पर विदेशी आक्रमण ( फारसी आक्रमण )

- भारत के पूर्वी क्षेत्र में मगध एक शक्शिाली राज्य था।
- ये अगल-बगल के छोटे राजाओं को हराकर भारत के पूर्वी क्षेत्र में राजनीतिक स्थिरता ला दी थी। किन्तु भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र (पंजाब) में छोटे-छोटे राजाओं का शासक था, जो कमजोर शासक थे। जिस कारण विदेशी आक्रमणकारी पश्चिमोत्तर क्षेत्र पर ही आक्रमण किया।
- भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण ईरान (फारस) के हखमनी वंश के राजा ने किया। हखमनी वंश के संस्थापक साइरस-II थे।
- इस वंश का शासक डेरियस-I (दायबर) ने भारत पर आक्रमण करने वाला पहला विदेशी राजा था। इसने गांधार तथा कम्बोज के शासक को हरा दिया।
- इसने भारत में फारसी शासन का विस्तार किया।
- डेरियस प्रथम के बाद फारस का शासन जेरेक्स प्रथम बना।
- जेरेक्स प्रथम के बाद डेरियस–III फारस का शासक बना।
- इस वंश के अंतिम शासक डेरियस-III को सिकंदर ने पराजित कर दिया और हखमनि वंश का अंत कर दिया और फारस पर अपना राज्य स्थापित कर दिया।

## मकदूनिया/यूनानी आक्रमण

- ईरान आक्रमण के बाद भारत पर दूसरा महत्वपूर्ण आक्रमण यूनानियों का हुआ।
- यूनान के राजा फिलिप द्वितीय का पुत्र सिकन्दर था।
- इनके माता का नाम ओलम्पिया था।
- यह अपने पति को जहर देकर हत्या कर दी थी।
- सिकन्दर का मूल नाम एलेक्जेंडर मेसेडोनियन था।
- इसका जन्म मेसिडोनिया (पेला) में 356 ई.पू. में हुआ।
- इसकी पत्नी रूखसाना/रेक्सोना थी। रूखसाना के पिता फारसी शासक शाहदारा थे।
- इसके घोड़े का नाम बुफेकराल/ब्यूसेफेलरू/बऊकेफला था।
- इसके गुरू का नाम अरस्तु था। जिसके नाम पर उसने झेलम नदी के तट पर एक नगर भी बसाया था।
- अरस्तु के गुरू प्लेटो थे, जिनको अफलातून कहा जाता था।
- प्लेटों के गुरू सुकरात थे, जिन्हें जहर का प्याला देकर मार दिया गया।
- भारत में सिकन्दर का सबसे पहला सामना तक्षशिला के राजकुमार आम्भिक से हुआ था। वहाँ के राजा आम्भिक ने सिकन्दर की अधीनता स्वीकार ली। गांधार की राजधानी तक्षशिला थी।
- 328 ई.पू. में सिकन्दर ने ईरान और अफगानिस्तान पर विजय प्राप्त किया।
- पंजाब के राजा पोरस (पुरु) और सिकन्दर के बीच झेलम नदी के तट पर युद्ध हुआ था।
- इस युद्ध में पोरस हार गए, किन्तु पोरस की वीरता को देखकर सिकन्दर ने उन्हें मित्र बना लिया, और सिकन्दर की पत्नी रेक्सोना ने पोरस की कलाई पर राखी बांधी।
- 326 ई.पू. में हुए इस युद्ध को झेलम, वितस्ता या हाइडेस्पीज का युद्ध कहते हैं।
- सिकन्दर स्थल मार्ग से 325 ई० में वह अपनी सेना के साथ भारत से लौट गया था।
- 323 ई.पू. में ईराक के बेबिलोन में (डायरिया) होने के कारण सिकन्दर की 33 वर्ष की अवस्था में मृत्यु हो गई।
- सिकन्दर का मकबरा बेबीलोन में है।
- बेबीलोन का झूलता हुआ बगीचा 7 अजूबों में से एक है।
- सिकन्दर भारत से कुशल बढ़ई प्राप्त करना चाहता था।
- सिकन्दर भारत में 19 महीने तक रहा था।
- सिकन्दर के साथ भारत आनेवाला लेखक निर्याकस, आने सिक्रेटस, ऑस्टिबुलस थे।
- सिकन्दर हिन्दकुश पर्वत (खैबर दर्रा) को पार करके भारत आया था।
- सिकन्दर की सेना ने व्यास नदी (हाईफेनिया) को पार करने से मना कर दिया।
- सिकन्दर अपनी सेना को नदी पार करने के लिए बहुत प्रेरित किया, लेकिन उसकी सेना ने व्यास नदी के रौद्र रूप को देख कर भारत से युद्ध के लिए आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। अत: स्थल मार्ग से 325 ई० पू० सिकन्दर अपनी सेना के साथ भारत से लौट गया।
- सिकन्दर का थल सेना के सेनापति सेल्युकस निकेटर था। जबकि जल सेना का सेनापति निर्याकस था।
- सिकन्दर का पुत्र सिकंदर चतुर्थ था जो पत्नी रूखसाना का पुत्र था।
- सिकन्दर लड़ाई में खुद सेना से आगे होकर लड़ने लगता था जिससे सेना का मनोबल और बढ़ जाता था।
- सिकन्दर को विश्व विजेता इसलिए कहा जाता है कि उस समय यूनान के लोगों को विश्व की जितनी जानकारी थी उन सभी क्षेत्रों को जीत लिया था।
- सिकन्दर पूरी दुनिया के 60% भाग को जीत लिया था।
- सिकन्दर ने एशिया माईनर (तुर्की), सीरिया, मिश्र, इराक, इरान, सिन्ध, गंधार, कंबोज जीत लिया था।
- सिकन्दर को पूरी दुनिया जीतने का सपना उसके गुरू अरस्तु ने दिखाया था।

❑❑❑